राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

सहायक निदेशक आयुर्वेद/जिला आयुर्वेद अधिकारी/प्रभारी अधिकारी फार्मेसी,

आयुर्वेद विभाग के पदों की संवीक्षा परीक्षा का पाठ्यक्रम

1 काय चिकित्सा –

(क) परिचय, चिकित्सा के प्रकार ।
(ख) चिकित्सा के सामान्य व विशेष सिद्धान्त ।
(ग) विभिन्न रोगों के निदान, सम्प्राप्ति व चिकित्सासिद्धान्त ।
(घ) विभिन्न रोगों की पथ्यापथ्य सहित चिकित्सा व्यवस्था ।
(च अधोलिखित औषध योगों के घटक एवं प्रयोगपरक परिज्ञान –

- अविपत्तिकर चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, हिंग्वष्टक चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, नवायस चूर्ण, जातीफलादि चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण, कल्याणक लेह चूर्ण, बालचातुर्भद्र चूर्ण, पंचसकार चूर्ण, सुदर्शन चूर्ण ।
- चित्रकादि वटी, गन्धक वटी, शंख वटी, शूलवज्रिणी वटी, विष तिन्दुक वटी, आरोग्यवर्धिनी वटी, चन्द्रप्रभा वटी, अग्नितुण्डी वटी, शिवा गुटिका, संजीवनी वटी, संशमनी वटी, लवंगादि वटी, एलादिवटी ।
- त्रयोदशांग गुग्गुलु, गोक्षुरादि गुग्गुलु, विंशति गुग्गुलु, पंचतिक्तघृत गुग्गुलु ।
- दशमूल क्वाथ, धान्यपंचक क्वाथ, रास्ना सप्तक, पुनर्नवाष्टक क्वाथ, मंजिष्ठादिक्वाथ, गोजिह्वादि क्वाथ, पंचवल्कल क्वाथ ।
- त्रिभुवनकीर्तिरस, लक्ष्मीविलास रस, श्वासकुठार रस, क्रव्याद रस, सूतशेखर रस, श्रृंगाराभ्र रस, हृदयार्णव रस, ग्रहणी कपाद रस, योगेन्द्र रस, वृहद्वात चिन्तामणि, त्रैलोक्य चिंतामणि, रससिंदूर, मल्लसिन्दूर, मुक्ता पंचामृत, कहरवापिष्टी, पंचामृतपर्पटी ।
- अशोकारिष्ट, अश्वगंधारिष्ट, अरविन्दासव, कनकासव ।
- फलघृत, ब्राह्मी घृत, महातिक्त घृत, पंचगव्य घृत, सुकुमार घृत ।
- नारायण तैल, पंचगुण तैल, क्षीरबला तैल, प्रसारणी तैल, षड्विन्दु तैल, अणु तैल, बिल्ब तैल, जात्यादि तैल ।

(छ) पंचकर्म – पूर्वकर्म, प्रधानकर्म, पश्चात् कर्म –

शिरोधारा, कटिवस्ति, शालिषष्टिक पिण्ड स्वेद, पिडिचिल, निरूहबस्ति निर्माण एवं प्रयोग विधि । अनुवासन प्रयोग विधि । निम्नलिखित बस्तियों के प्रमुख घटक व निर्माण विधि – एरण्ड मूलादि निरूह बस्ति, मुस्तादि यापना बस्ति, पिच्छाबस्ति वैतरण बस्ति ।

2 बाल रोग, प्रसूति स्त्री रोग –

(क) नवजात शिशु परिचर्या ।
(ख) कौमार भृत्य की परिभाषा एवं महत्व, गर्भ, बाल, कुमार, युवा आदि की परीक्षा ।
(ग) सद्योजात – जातमात्र – नवजात – बाल परिचर्या, स्तन्याभाव में पथ्य, स्तन्य परीक्षा एवं दोष निवारण के उपाय ।
(घ) दन्तोद्गम जन्य व्याधियाँ व चिकित्सा ।
(च) बालशोष, फक्क, बालातिसार ।

(छ) बालकों के विभिन्न प्रतिरक्षण कार्यक्रम ।
(ज) मातृ–शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम ।
(झ) जननी सुरक्षा योजना ।
(ट) ऋतुकाल, ऋतुमती एवं रजोनिवृत्ति का परिज्ञान ।
(ठ) मासानुमासिक गर्भवृद्धि एवं गर्भ पोषण ।
(ड) गर्भिणी व्यापद् व प्रसव व्यापद् तथा इनका निवारण ।
(ढ) आर्तव संबंधी रोग, प्रदर, सूतिका ज्वर, मक्कलशूल, गर्भिणी – पाण्डु, सूतिका – परिचर्या ।

3 शल्य – शालाक्य तंत्र –

(क) व्रण, व्रणशोथ, विद्रधि की परीक्षा, स्थान, आकृति एवं अधिष्ठानानुसार भेद, उपद्रव, दोष, साध्यासाध्यता एवं चिकित्सोपक्रम ।
(ख) क्षार निर्माण विधि एवं विभिन्न रोगों में प्रयोग ।
(ग) रक्त मोक्षण के प्रकार, विधि एवं तत्साध्य व्याधियाँ ।
(घ) अर्बुद के प्रकार, कर्कटार्बुद के आयुर्वेदिक व आधुनिक उपक्रम ।
(ड़) शस्त्र कर्म साध्य व्याधियाँ एवं चिकित्सोपक्रम –
(च) नेत्र रोग – निदान व चिकित्सा, दृष्टि परीक्षा एवं नेत्र रोगों के विभिन्न उपक्रम यथा – आश्च्योतन, पुटपाक, तर्पण, विड़ालक अंजन एवं स्वेदन विधि का परिज्ञान ।
(छ) विभिन्न शिरोरोग – निदान एवं चिकित्सा ।
(ज) विभिन्न कर्ण व नासागत रोग – लक्षण व चिकित्सा ।
(झ) मुख, औष्ठ, जिव्हा, तालु व दन्तगत रोग एवं उनकी चिकित्सा ।

4 द्रव्य–गुण एवं रसशास्त्र भैषज्य कल्पना, अगद तंत्र एवं विधि वैद्यक –

(क) द्रव्यों का वर्गीकरण एवं द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म का परिचय ।
(ख) द्रव्य संकलन – संग्रहण – संरक्षण एवं प्रसंस्करण विधियाँ ।
(ग) औषध मात्रा निर्धारण सिद्धान्त, भैषज प्रयोग प्रकार ज्ञान ।
(घ) लुप्तप्राय वनस्पतियों के संरक्षण के उपाय ।
(ड़) रस, महारस, उपरस, रत्न, उपरत्न, धातु, उपधातु, विषों एवं उपविषों का परिचय तथा शोधन ।
(च) रस संस्कार एवं मूर्च्छना, कूपीपक्व निर्माण विधि ।
(छ) पंचविध कषाय, कल्पना, संधान कल्पना एवं पथ्य कल्पना का निर्माण, मात्रा एवं प्रयोग परिज्ञान ।
(ज) स्नेह पाक विधि परिज्ञान ।
(झ) विष योनि, भेद एवं वर्गीकरण, स्थावर, जंगम गर व दूषी विष ।
(ञ) विष की सामान्य चिकित्सा एवं विविध उपक्रम ।
(ट) चिकित्सक के कर्तव्य, नियम, व्यावसायिक अधिकार एवं गोपनीयता ।
(ठ) अभिघात भेद, दग्ध प्रकार, आयु विनिर्णय एवं मृत्यु का व्यवहारायुर्वेदीय पक्ष ।
(ड) राजस्थान में/इतर राज्यों तथा केन्द्रीय चिकित्सा समभ्यास पंजीकरण के नियम ।
(ढ) ड्रग एण्ड कॉस्मेटिक एक्ट एवं राजस्थान सरकार द्वारा समय–समय पर जारी एतद्संबंधी आदेश/अध्यादेश ।
(ण) चिकित्सा सेवा/राज्य सेवा नियमों का सामान्य परिज्ञान ।

5 रोग एवं विकृति विज्ञान –

(क) व्याधि वर्गीकरण, निदान पंचक, षट्क्रियाकाल का नैदानिक महत्व ।
(ख) दोष – धातु, मलों का विकृति विज्ञानीय अध्ययन ।

(ग) विविध रोगी परीक्षा – त्रिविध, षट्विध एवं अष्टविध ।
(घ) धातु, उपधातु, मल एवं इन्द्रिय प्रदोषज विकारों का पूर्ण परिज्ञान ।
(ड़) कोष्ठ व शाखागत विकार ।
(च) रोगोत्पत्ति में स्त्रोतस् का महत्त्व ।
(छ) विकृति विज्ञानीय परीक्षण (प्रयोगशालीय रक्त, मूत्र, ष्ठीवन एवं वीर्य के विविध परीक्षण)

6 शारीर –

(क) प्रकृति – भेद व स्वरूप एवं निर्धारण ।
(ख) प्रमाण शारीर – अस्थि संधि – पेशी – कण्डरा – संख्या शारीर ।
(ग) स्त्रोतस् – शारीर एवं विविध संस्थान ।
(घ) कोष्ठांग शारीर, उत्तमांग शारीर ।
(च) दोष – धातु – मल – क्रिया विज्ञान ।
(छ) जाठराग्नि, भूताग्नि व धात्वग्नि विवेचन ।
(ज) ज्ञानेन्द्रिय रचना व क्रिया व्यापार ।
(झ) अन्तःस्त्रावि ग्रंथियाँ ।

7 स्वस्थवृत्त –

(क) दिनचर्या, ऋतुचर्या, सद्वृत्त धारणीय – अधारणीय वेग ।
(ख) जीवन शैली जनित व्याधियाँ एवं उनके प्रतिकार ।
(ग) आहारविधि विशेषायतन, आहारविधि विधान, संतर्पण – अपतर्पण जन्य व्याधियाँ, सन्तुलित आहार एवं आहार मात्रा परिज्ञान ।
(घ) उपस्तंभ परिचय ।
(च) मल एवं अपद्रव्य निवारण व्यवस्था ।
(छ) जनपदोध्वंस, विविध संक्रामक एवं संसर्गज रोग एवं बचाव ।
(ज) HIV/AIDS/हिपेटाइटिस व्याधियाँ एवं बचाव ।
(झ) प्राकृतिक चिकित्सा विधियाँ एवं अष्टांग योग परिचय ।

* * * * *

Pattern of Question Papers :

1 Objective Type Paper.
2 Maximum Marks : 100
3 Number of Questions : 120
4 Duration of Paper : Two Hours.
5 All Questions carry equal marks.
6 There will be **Negative Marking**.

* * * * *